ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-५७
दिनांक- मंगलवार, १८ अगस्त, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३१.४ एवं २६.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८८ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७० प्रतिशत, हवा की औसत गति ७.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ४.२ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ४.५ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २९.५ एवं दोपहर में ३१.२ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में ४.८ मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१९-२३ अगस्त, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १९-२३ अगस्त तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में हल्के से मध्यम बादल देखे जा सकते हैं। इस अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में अच्छी वर्षा की संभावना नहीं है। कहीं-कहीं छिटपुट बर्षा हो सकती है, हलॉकि अधिकतर स्थानों में मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३६ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २४-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा चलने का अनुमान है। औसतन ७-९ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७५ से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५० से ६० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- धान की २५-३० दिनों की फसल में प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन का उपरिवेशन करें। अगात धान की फसल में खैरा बीमारी दिखाई पड़ने पर खेतों में जिंक सल्फेट ५.० किलोग्राम तथा २.५ किलोग्राम बुझा चूना का ५०० लीटर पानी में घोल बना कर एक हेक्टेयर में छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। पिछात रोपी गई धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें।
- सितम्बर अरहर की बुआई के लिए खेत की तैयारी करे। किसान भाई २५ अगस्त के बाद इसकी बुआई कर सकते हैं। बुआई के समय प्रति हेक्टेयर २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फुर,२० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम सल्फर का व्यवहार करें। अरहर की पूसा-९ तथा शरद प्रभेद उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- फूलगोभी की अगात किस्में कुँआरी, पटना अर्ली, पूसा कतकी, हाजीपुर अगात, पूसा दिपाली की रोपाई समाप्त करें। बोरान तथा मॉलिब्डेनम तत्व की कमी वाले खेत में १०-१५ किलो ग्राम बोरेक्स तथा १-२ किलोग्राम अमोनियम मालिब्डेट का व्यवहार खेत की तैयारी के समय करे। फुलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी मे उथली क्यारियों मे पंक्तियों में गिराये। पौधशाला को तेज धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए ४० प्रतिशत छायादार नेट से ६-७ फीट की ऊचाई पर ढ़कने की व्यवस्था करें।
- खरीफ प्याज की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी-छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई २ मीटर एवं लम्बाई ३ से ५ मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवश्य बनावें। पॉक्ति से पॉक्ति की दुरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर रोपाई करें।
- जो किसान भाई फलदार पौधों का बगीचा लगाना चाहते हैं वे अविलम्ब पौधों की रोपाई कर लें। रोपाई के पहले, प्रति गड्ढ़ा ४० से ५० किलोग्राम सड़ी गोबर का प्रयोग करें।
- मक्का की खड़ी फसल में तना छेदक कीट की निगरानी करें। यह कीट फसल को काफी नुकसान करता है। इस कीट की सूंडियाँ पहले कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर उन्ही से होते हुए तने में पहुच जाती है एवं तने के गूद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। फलतः मध्य कलिका मुरझाकर सुखी हुई नजर आती है एवं इसे अगर पकड़कर खींचा जाए तो वह आसानी से बाहर निकल आती है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर कार्बोफ्यूरान (३ जी) का ७ किलोग्राम/हे० की दर से पौधें के गाभा में डालें।
- उचॉस जमीन परवल की राजेन्द्र परवल-१, राजेन्द्र परवल-२, एफ०पी०-१, एफ०पी०-३, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई०आई०भी०आर०-१ आदि किस्मों की रोपनी करें। बीज दर २५०० गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दुरी २ ग २ मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढ़ा कम्पोस्ट ३ से ५ किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली २५० ग्राम, एस०एस०पी० १०० ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश २५ ग्राम एवं थिमेट १० से १५ ग्राम का व्यवहार करें।
- बाढ़ के दौरान चारा दाना की कमी को पूरा करने के लिए गन्ना के पत्ते, सहजन, केला के पत्ते एवं ढैंचा का चारा को ५० ग्राम नमक, ५० ग्राम गुड़ एवं ५० ग्राम खनिज मिश्रण के साथ प्रत्येक दुधारू पशुओ को खिलाये। फफूंद लगे अनाज एवं भूंसा का प्रयोग नहीं करे। पशुओ को ऊँचे, सूखे स्थान पर रखे एवं उनके पैरों को फिटकरी या पोटासियम परमैग्नेट के घोल से धोते रहें। बाढ़ के दौरान पशुओ को फिवर फ्लूक परजीवी से सुरक्षा के लिए अहक्सीक्लोजनाइड एवं लेवमीसोज दवा १०० मिलीलीटर एक बार पिलायें। बाद के पानी में भीगा चारा या दाना नहीं खिलाये। पशुओं को दिन में तीन बार स्वच्छ पानी पिलायें। इस दौरान थनैला रोग से बचाव के लिए दुहाई के तुरंत बाद थन को पोटासियम परमैग्नेट के घोल से धोएं।

आज का अधिकतम तापमानः ३३.१ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.६ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २७.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.४ डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी